विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 24 नवंबर 2020

वर्ग षष्ठ शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय ।

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित ।

हास्यालापाः

हिंदी अर्थ सहित।

जजः- त्वं पुनः न्यायालयम् आगच्छः किं त्वम् न लज्जसे ?

तुमको बार-बार न्यायालय आने में क्या तुमको लज्जा नहीं लगता है ।

चोरः –श्रीमन्! अहं तु यदा कदा अत्र आगच्छामि परन्तु भवान् अत्र प्रतिदिनम् आगच्छति ।

चोर –श्रीमान् ! मैं तो यदा-कदा यहाँ आता हूँ परंतु आप तो यहाँ प्रतिदिन आते हैं।

एके मित्रः –मित्र ! अहम् अमेरिकादेशं गन्तुं चिन्तयामि।

मित्र मैं अमेरिका जाने के लिए सोच रहा हूँ ।

कृपया कथयतु कति रूप्यकाणि आवश्कानि ?

कृपया करके बताओ कितने रुपया की आवश्यकता है।

मित्रः- मित्र ! चिन्तने रूप्यकाणाम आवश्यकता नास्ति

मित्र चिंता में रुपया का आवश्यकता नहीं है चिंता नहीं होती है मूल्य की ।

चिन्त्यं नैव भवति मूल्यम्।

चिंता नहीं होती है मूल्य की होती।